Model Question Paper
आदर्श प्रश्न पत्र
वार्षिक परीक्षा

विषयः संस्कृत **अंकः 100**
अवधिः होरात्रयम्

नोटः सभी भागों में से निर्देशानुसार उत्तर दें।

भाग–क (अपठित अववोधन)

प्र01 महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण हिन्दू संस्कृति का एक महान ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में मर्यादा पुरुषोत्तम राम को आधार बनाकर मानव जीवन के आदर्शों का एवं धर्म के विविध पक्षों का सम्यक् प्रकार से विवेचन किया गया है। भारतीय परम्परा के अनुसार इस आदिकाव्य को रचने की प्रेरणा महर्षि वाल्मीकि को क्रौंचवध की घटना से मिली। एक बार वाल्मीकि मुणि तमसा नदी के किनारे स्नान करने गये। क्षणभर के लिए वह वन की शोभा देखने लगे। उसी समय वहां क्रौंच पक्षी का जोड़ा विचरण कर रहा था। मुनि के सामने ही एक शिकारी ने क्रौंच जोड़े में से नर पक्षी को अपने बाण से घायल कर दिया। खून से लथपथ वह घायल पक्षी पृथ्वि पर गिर पड़ा और तडप–2 मर गया। इस दर्दनाक दृश्य को देखकर मुनि वाल्मीकि के हृदय में से अपने आप शापभरी यह वाणि फूट पड़ी। हे–शिकारी (हे–निषाद) राम के आदर्श चरित्र को आधार बनाकर काव्य रचने के कारण ही महर्षि वाल्मीकि आदिकवि कहलाये और उनका काव्य रामायण आदिकाव्य कहलाया।

ClassResult.in

- गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:–

क) रामायण के रचनाकार का नाम लिखें। (2)

ख) वाल्मीकि किस नदी के किनारे विचरण कर रहे थे। (2)

ग) गद्यांश का सार सरल भाषा में लिखें। (4)

घ) गंद्याश का शीर्षक लिखें। (2)

भाग–ख (रचनात्मक कार्य)

प्र01 निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करें:– (5)

क) वह पढ़ता है।

ख) मैं हँसता हूँ।

Scanned with CamScanner

ग) तुम खेलते हो।

घ) हम सब जाते हैं।

ङ) वे दो खेलते है।

प्र02 इस संस्कृत गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद करें:– (1x5=5)

महाकवि मालिदासः संस्कृत साहित्ये सर्वश्रेष्ठः कविः अस्ति। अनेन सप्तग्रन्थाः लिखिताः। वेषां नामानि यथा–

क) विक्रमोर्वशीयम्

ख) अभिज्ञान शाकुन्तलम्

ग) माल्विकाग्निमित्रम्

घ) कुमार सम्भवम्

ङ) रघुवंश महाकाव्यम्

च) मेघदूतम्

छ) ऋतुसंहारः च इति

प्र03 'कुमार सम्भवम्' पंचमसर्ग का सार लिखें। (5)

भाग–ग (अनुप्रयुक्त व्याकरणम्)

प्र01 निम्नलिखित प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर दें–

क) पचत् वर्धमान्, पठित, स्मृतवत् एवं भवितव्यम्। (कोई 3 शब्दों के प्रत्यय लिखें) (3)

ख) सन्धि करें– (कोई 2) (2)

1) यदि + अपि 2) हिम + आलय 3) पौ + अक

ClassResult.in

ग) सन्धिविच्छेद करें– (कोई 2) (2)

1) विद्यालय 2) स्वागत 3) रमेश

घ) 'अस्मद्' अथवा 'युष्मद' शब्दों की रूपावली लिखें। (तीनों वचनों में) (3)

ङ) 'राम' अथवा 'रमा' शब्दों की रूपावली लिखें। (तीनों वचनों में) (3)

च) 'गम्' धातु लोह् लकार अथवा 'स्मृ' धातु लट् लकार् में लिखें। (2)

छ) 'रक्ष्' धातु लृट् लकार् अथवा 'पा' धातु विधिलिंङ्ग लकार् में लिखें। (2)

ज) निम्नलिखित शब्दों के समास लिखें– (कोई 2) (2)

1) चतुर्भुजम् 2) राम लक्ष्मणौ 3) पीताम्बर 4) ग्रामगतः

झ) 'अव्यय' की परिभाषा लिखें। (1)

प्र02 रिक्त स्थानों की पूर्ति करें– (1x5=5)

क) अहम् ..... व्यम्

Scanned with CamScanner

ख) करिमन् कयोः .....

ग) गच्छति ..... गच्छन्ति

घ) पार्वती ने हिमालय के ..... शिखर पर तपस्या की

ङ) कुमारसम्भवम् ..... काव्य है।

भाग–घ (पठित अवबोधनम्)

प्र01 निम्नलिखित श्लोकों की सप्रसंग व्याख्या करें–

क) इयं बाला नवोद्वाहा सत्यं श्रुत्वा व्यथां व्रजेत्।
कामं धीरस्वभावेयं स्त्री स्वभावस्तु कातरः।।

अथवा

पद्मावती बहुमता मम यद्यपि रूपशीलमाधुर्यैः।
वासवदत्ताबद्धं न तु, तावन्मे मनो हरति।। (5)

ख) इदमपि बहुमन्तव्यम्। दुर्लभमिदानीं मे सखीमण्डनं–भविष्यतीति।

अथवा

शार्ङ्गरव इति त्वया मद्वचनात्स राजा शकुन्तलां पुरस्कृत्य वक्तव्यः। (5)

ग) तथा समक्षं दहता मनोभवं पिनाकिना भग्नमनोरथा सती।
निनिन्द रूपं हृदयेन पार्वती प्रियेषु सौभाग्य फला हि चारुता।।

ClassResult.in

अथवा

मनीषिताः सन्ति गृहेषु देवतास्तपः क्व वत्से क्व च तावकं वपुः।
पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं शिरीष पुष्पं न पुनः पतत्त्रिणः।। (5)

प्र02 निम्नलिखित श्लोकों की हिन्दी में व्याख्या (अनुवाद करें)

क) उदगलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्त्तना मयूराः।
अपसृत पाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लता।।

अथवा

ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।
सुतं त्वमपि सम्राजं सेव पुरुमवाप्नुहि।। (4)

ख) इक्ष्वाकूणां च सर्वेषां क्रिया पुंसवनादयः।
अस्माभिरेव वर्त्यन्ते मा शुचौ गर्भमात्मनः।।

Scanned with CamScanner

अथवा

कौशल्या पादशुश्रूषा सौख्यं वृद्धासु लप्स्यसे।

पश्च सख्यौ भगिन्यश्च तवैता गर्भमात्मनः।। (4)

प्र03 निम्नलिखित श्लोकों की सप्रसंग व्याख्या करें।

क) शुचौ चतुर्णां ज्वलतां हविर्भुजां शुचिस्मिता मध्यमता सुमध्यमा।

विजित्य नेत्र प्रतिघातिनीं प्रभामनन्यदृष्टि सवितारमैक्षत्।।

अथवा

कियाच्चिरं श्राम्यसि गौरी विद्यते ममपि पूर्वाश्रम संचित तपः।

तदर्धभागेन लभस्व कांक्षित वरं तमिच्छामिच साधु वेदितुम्।। (4)

ख) इयं महेन्द्रप्रभृतीन धिश्रियश्चतुर्दिगीशानवमत्य मानिनि।

अरुपहार्यं मदनस्य निग्रहातपिनाक पाणिं पतिमाप्तुमिच्छति।।

अथवा

यथा श्रुतं वेदविदांवर त्वया जनोयऽमुच्चैः पदलंघनोत्सुकः।

तपः किलेदं तदवाप्ति साधनं मनोरथा नामगतिर्न विद्यते।। (4)

ग) एषापि प्रियेण विना गमयति रजनी विसूरणदीर्घाम्।

गुर्वीप विरह दुःखमाशाबन्धः साहयति।

अथवा

अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतु।

जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।। (4)

ClassResult.in

भाग–घ –(II) (संस्कृत साहित्येतिहासस्य सामान्य परिचय)

प्र01 महाभारत के रचनाकार कौन हैं। (2)

प्र02 रामायण एवं महाभारत का तुलनात्मक अध्ययन पर लघु निबन्ध लिखें। (5)

प्र03 नाटकार भास का परिचय लिखें। (4)

प्र04 'उपमा कालिदासस्य' पर लघु लिखें। (4)

Scanned with CamScanner